

पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय

03-जनवरी-2015 18:17 IST

---

102वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का मूल पाठ

मैं अपनी बात शुरू करने से पहले, सबसे पहले श्री वसंत गोवारिकर जो हमारे देश के गणमान्य वैज्ञानिक थे और आज ही हमारे बीच नहीं रहे। मैं इसी धरती की संतान और भारत को विज्ञान जगत में आगे बढ़ाने में जिन्होंने बहुत अहम भूमिका निभाई थी ऐसे श्रीमान वसंत गोवारिकर जो को हृदय अंतःकरण पूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ।

देवियों और सज्जनों,

भारतीय विज्ञान कांग्रेस में शामिल होना एक बड़ा सम्मान है। मैं इस आयोजन के लिए मुम्बई विश्वविद्यालय का धन्यवाद करता हूँ।

गुजरात का मुख्यमंत्री रहते हुए मुझे विज्ञान कांग्रेस में शामिल होने का मौका मिला था। दस साल बाद दोबारा मिले इस अवसर से मुझे खुशी हुई है।

मैं सौ साल पुरानी संस्था के समृद्ध इतिहास की प्रशंसा करता हूँ।

मैं वैज्ञानिकों द्वारा किए गए कार्यों के लिए उनका आभारी हूँ और मैं मानता हूँ कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी, विकास और सुशासन के अमूल्य सहयोगी हैं।

मानव का स्वभाव दुनिया और ब्रह्माण्ड के बारे में जानने और समझने का है इसी वजह से मानव सभ्यता इतनी विकसित हुई है।

यह विश्वास के द्वारा संचालित एक खोज है जिसे हमारे वेदों में सत्य सर्व प्रतिष्ठानां - सत्य में सबकुछ समाहित है के रूप में व्याख्या की गई है।

विज्ञान मानव मस्तिष्क की उपज हो सकता है लेकिन यह मानव जीवन को बेहतर बनाने की मानवीय भावनाओं द्वारा भी संचालित होता है।

हमारे साथ नोबल पुरस्कार विजेता मौजूद हैं, जिनके विज्ञान के क्षेत्र में कार्य ने जानलेवा बीमारियों से निपटने में नई उम्मीद जगाई है।

हमारे पास एक ऐसे व्यक्ति भी हैं जिनकी सामाजिक विज्ञान की समझ ने सबसे गरीब लोगों को आशा, अवसर और सम्मानजनक जीवन दिया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, गरीबी से निपटने और समृद्धि के विस्तार में सहायक हैं; भूख मिटाने और बेहतर पोषण; बीमारियों का खाल्ता; स्वास्थ्य का स्तर सुधारने और बच्चों को जीवन देने के ज्यादा अवसर उपलब्ध कराने; अपने प्रियजनों और दुनिया से जुड़ने; शिक्षा और जागरूकता के प्रसार; और हमें पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा उपलब्ध कराता है जो हमारे पर्यावास को ज्यादा वहनीय बनाता है।

राष्ट्र की प्रगति और मानव का विकास विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े हुए हैं। हाल के वर्षों में चीन दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है साथ ही उसने खुद को समानांतर रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी दूसरे स्थान पर स्थापित किया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी राष्ट्र की सीमाओं को लांघते हुए विश्व को एक सूत्र में पिरोता और शांति का प्रसार करता है। यह विश्व की चुनौतियों से निपटने के सामूहिक प्रयासों में गरीब और अमीर देशों को साथ ला सकता है।

लेकिन हम जानते हैं कि यह असमानता बढ़ा सकता है, युद्धों को ज्यादा संहारक बना सकता है और पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकता है। कभी कभी हमें जटिलताओं के बारे में बाद में पता चलता है जैसा कि हमने जलवायु परिवर्तन के साथ किया; कभी कभी ये हमारे अपने फैसलों का परिणाम होता है।

उदाहरण के तौर पर, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास क्षमता और उत्पादकता बढ़ाने किया गया; यद्यपि इसके विभिन्न भटकाव सरलता से हमें पराजित कर सकते हैं। जैसा कई बार होता है कि हम किसी बैठक में हैं और मन में अपने संदेशों को पढ़ने का लालच रहता है।

इसलिए, जब भी हम विज्ञान और मानव विकास की बात करते हैं, हम इसे समानता, सिद्धांत और पहुंच जैसे राजनीतिक फैसलों से अलग नहीं कर सकते।

मानव विकास का वृहद उद्देश्य है जो भारतीय वैज्ञानिक गतिविधियों की असली ताकत है और विज्ञान आधुनिक भारत के निर्माण में सहयोग करता है।

आजादी की शुरुआत के साथ प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को राष्ट्रीय विकास के केंद्र में स्थापित किया था। हमारे वैज्ञानिकों ने मामूली संसाधनों के साथ भलि प्रकार देश की सेवा करने वाले अग्रणी अनुसंधान किए और अभूतपूर्व संस्थाओं का निर्माण किया।

तभी से हमारे वैज्ञानिकों ने कई क्षेत्रों में हमें विश्व में अग्रणी बनाए रखा है।

जब कभी विश्व ने हमारे लिए रास्ते बंद किए, हमारे वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय अभियान की भावना के साथ कार्य किया। जब भी विश्व ने हमसे सहयोग मांगा, हमारे वैज्ञानिकों ने खुलेपन से उनका स्वागत किया जो हमारे समाज में अंतर्निहित है।

उन्होंने मावन विकास की सबसे गंभीर और दृढ़ चुनौतियों का निवारण किया है। उन्होंने भोजन जैसी आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूसरों पर निर्भरता को समाप्त करने में हमारी मदद की है। उन्होंने हमारी सीमाओं को सुरक्षित बनाया है, औद्योगिक प्रगति में सहायता की और हमारे लोगों को सम्मानजनक और अवसरों से पूर्ण जीवन प्रदान किया है।

हमारे वैज्ञानिकों ने पहले ही प्रयास में मंगलयान को मंगल की कक्षा में स्थापित कर दिया। मैं राधा कृष्णन की टीम को बधाई देता हूँ - हृदय तूफान के बार में वैज्ञानिकों के सटीक अनुमान से हजारों लोगों की जान बचाई जा सकी; हमारे

परमाणु वैज्ञानिक ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता के लिए काम कर रहे हैं और उन्होंने कैंसर के इलाज और अनुसंधान के मामले में एशिया क्षेत्र में भारत को अग्रणी बना दिया है।

हमारी उपलब्धियों पर हमें गर्व है लेकिन उन चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जिनका हम देश में सामना करते हैं।

हम उसी तरह की उम्मीदों और उत्साह के माहौल में हैं जैसा कि देश की स्वाधीनता के समय था।

इस समय देश में परिवर्तन के लिए सकारात्मक माहौल है; इसे बनाए रखने के लिए ऊर्जा और इसे हासिल करने के लिए विश्वास की जरूरत है।

लेकिन भारत के बारे में हमारे जो सपने हैं - खेती को ज्यादा व्यवहारिक और उत्पादक बनाना; ग्रामीण क्षेत्रों के लिए वहनीय और उपयुक्त तकनीकी विकसित करने; पानी की हर बूंद का बेहतर इस्तेमाल; और समुद्रीय संसाधनों की क्षमता के इस्तेमाल; अपनी जैव विविधता के संरक्षण; अपने पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए - विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर उतना ही नभर करते हैं जितना कि नीति और संसाधनों पर।

गरीबों की पहुंच योग्य बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और दवाओं और स्वास्थ्य उपकरणों के विकास; पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा को वहनीय और ज्यादा कारगर बनाने के लिए;

प्रौद्योगिकी के प्रयोग से सभी के लिए घर और स्वच्छता के सपने को पूरा करने के लिए हमारे शहरों को स्वच्छ और अधिक रहने योग्य बनाने के लिए हमें ही समाधान ढूँढना, व्यर्थ को संपदा में बदलने और भविष्य के सतत ढांचा विकास के लिए संसाधन ढूँढना, मानव विकास के लिए इंटरनेट का उपयोग करना, भारत को प्रमुख विनिर्माण देश और ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आधारित उद्योग के लिए केन्द्र बनाना, मेरे लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की पहुंच सबसे गरीब, सबसे पिछड़े और सबसे असहाय लोगों तक पहुंचाना है

यह राष्ट्रीय महत्व का उद्यम है जिसमें सरकार, उद्योग, राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों को मिलकर कार्य करना होगा

अधिकतर विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर बातचीत बजट के प्रश्न तक ही सीमित होती है यह महत्वपूर्ण है और मुझे विश्वास है कि इसमें लगातार वृद्धि होगी

लेकिन हमारी उपलब्धियों ने यह दर्शा दिया है कि कई बार सफलता के लिए आवश्यकता, विज्ञान और जोश अधिक महत्वपूर्ण होते हैं

और संसाधनों का हम कैसे उपयोग कर सकते हैं कि कैसे प्रभावी निर्धारण हो जिससे विज्ञान और प्रौद्योगिकी को हमारे लिए कारगर बनाया जा सके

हमारे विकास की चुनौतियां, स्वाभाविक रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारी प्राथमिकताएं तय करेगी

हम कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ध्यान दे रहे हैं लेकिन हमें अनुसंधान और विकास को कुछ पूर्व निर्धारित लक्ष्यों तक ही सीमित नहीं रखने चाहिए

और अनुसंधान, विकास तथा नवाचार पर जितना ध्यान दिया जाता है उतना ही ध्यान आधारभूत अनुसंधान पर भी देना महत्वपूर्ण है।

हमें यह भी मानना चाहिए कि विज्ञान सर्वव्यापी है लेकिन प्रौद्योगिकी स्थानीय हो सकती है।

अगर हम पारंपरिक और स्थानीय ज्ञान, प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों को इसमें शामिल करें तो हम अधिक उचित, प्रभावी, वहन करने योग्य और सतत समाधान विकसित कर सकते हैं जो मानव विकास और प्रगति में बड़ा योगदान दे सकते हैं

सरकार को देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रमुख स्रोत के तौर पर विकसित करने के लिए भी कदम बढ़ाना चाहिए

जब मैं देश में रोजगार करने में आसानी की बात करता हूं तब मैं यह भी चाहता हूं कि देश में विकास और अनुसंधान में भी आसानी पर उतना ही ध्यान दिया जाए।

प्रस्तावित धनराशि स्वीकृत करने में अधिक समय ना लगाया जाए, बैठक- आवेदन पत्र की आवश्यकताएं अनुसंधान से अधिक जटिल नहीं होनी चाहिए, स्वीकृति की प्रक्रिया अंतराष्ट्रीय सम्मेलन के लिए बाधा नहीं बननी चाहिए, हमारे वैज्ञानिक विभागों को अनुसंधान गतिविधियों में अंतर्निहित अनिश्चिताओं के आधार पर धनराशि के बारे में फैसला लेने में लचीला होना चाहिए।

मैं चाहता हूं कि हमारे वैज्ञानिकों तथा शोधकर्ताओं को सरकारी प्रक्रियाओं के बजाए, विज्ञान के रहस्यों को उजागर करना चाहिए।

हम चाहते हैं कि उनके शोधकार्य ही उनकी सफलता के प्रतिमान हों और वे सरकारी मंजूरी के मोहताज नहीं हों। हमें जैव तकनीकी, नैनो साइंस, कृषि एवं क्नीनिकल शोध के क्षेत्र में शोध एवं विकास संबंधी स्पष्ट नियामक नीतियां बनानी हैं। हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी मजबूत बौद्धित संपदा व्यवस्था लगातार प्रभावी रूप से काम करती रहे और निजी क्षेत्र के प्रोत्साहन एवं सामाजिक बेहतरी के बीच सही संतुलन बना रहे।

इसके अलावा, न केवल वैज्ञानिक विभागों, बल्कि प्रत्येक सरकारी विभाग में एक ऐसा अधिकारी होना चाहिए जो अपने क्षेत्र से संबंध कार्य में विज्ञान एवं तकनीकी पर अधिक ध्यान दे और ऐसी गतिविधियों के लिए विभाग के बजट में से कुछ प्रतिशत धनराशि का आवंटन करें। हम यह अनुभव अंतरिक्ष तकनीकी के साथ शुरू कर चुके हैं

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी गतिविधियों में निवेश, कारपोरेट सामाजिक दायित्व के व्यय का भी एक हिस्सा बनाया जाना चाहिए जिसे प्रत्यक्ष अथवा किसी स्वायत्त धनराशि से पूरा किया जा सकता है। हमें विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विकासों,

नवाचारों तथा विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए विभिन्न संख्याओं तथा क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने की मजबूत संस्कृति की आवश्यकता है। मेरा मानना है कि यह भारत में आदर्श से कहीं अधिक दूर है।

मैं हमारे मंत्रालयों से कहूंगा कि वे अनुसंधान के लिए धनराशि के अनुरोध पर सहायता करने और उनके संस्थानों के साथ सहयोग को आवश्यक बनायें।

हमें देश में विश्वविद्यालय प्रणाली को अनुसंधान और विकास गतिविधियों में अग्रणी बनाना होगा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हमारा निवेश केन्द्र सरकार के एजेंसियों तक ही सीमित है और इसे अधिक क्षेत्रों में बढ़ाया जाना चाहिए।

हमारे विश्वविद्यालय अत्यधिक नियमन के शिकंजे और बोझिल प्रक्रियाओं से मुक्त होने चाहिए। वहां पर अधिक अकादमिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता होनी चाहिए और शिक्षण के समान ही अनुसंधान पर भी जोर दिया जाना चाहिए।

इसके परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालयों की उच्च अकादमिक और अनुसंधान स्तरों पर जिम्मेदारी बढ़ेगी, जिसमें संपूर्ण समकक्ष समीक्षा शामिल होगी।

हमें हमारे उच्च शिक्षण क्षेत्रों को तेजी से विस्तार करना होगा हालांकि हमारे मौजूदा संस्थानों में फैकल्टी की कमी है।

हमारे पास केंद्रीय संस्थाओं और एजेंसियों में काम करने वाले प्रख्यात वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की कमी नहीं है और मैं चाहता हूँ कि वे प्रतिवर्ष किसी विश्वविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों में कुछ समय व्यतीत करें और पीएचडी के छात्रों को गाइड करें।

हमारे उद्योग जगत को पहल करते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निवेश को बढ़ाना है।

भारत के फार्मास्यूटिकल उद्योग ने विश्व में अपनी पहचान बनाई है क्योंकि इसने शोध के क्षेत्र में काफी निवेश किया है। वस्तुतः हमारी लंबी वैश्विक प्रतिस्पर्धा दूसरों की यह नकल करने पर निर्भर नहीं करेगी कि उन्होंने क्या किया है बल्कि यह सतत विकास एवं नवाचार की प्रक्रिया पर आधारित होगी।

शोध एवं विकास के क्षेत्र में न केवल व्यापारिक जगत में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की प्रवृत्ति बढ़ रही है बल्कि यह विश्वविद्यालयों और प्रयोगशालाओं में शोध कार्यों और विद्वानों में भी दिख रही है। हमें इसका पूर्ण रूप से लाभ उठाना चाहिए। इसी वजह से मैंने अपने कूटनीतिक एजेंडों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सबसे आगे रखा है।

मैंने विश्व की अनेक देशों की यात्रा के दौरान वैज्ञानिकों से व्यक्तिगत रूप से स्वच्छ ऊर्जा, कृषि, जैव-तकनीकी, चिकित्सा, औषधि तथा स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्रों में सहयोग के बारे में जानकारी ली है।

विश्व के समक्ष आज विशाल चुनौतियों का समाधान करने के लिए हमने सभी अग्रणी देशों के साथ उत्कृष्ट सहयोग स्थापित किया है और मैंने अपने पड़ोसी देशों तथा अन्य विकासशील देशों को अपनी विशेषज्ञता की पेशकश की है।

मैं अक्सर अपने देश के युवाओं के लिए कौशल विकास की बात करता हूँ अगर हम अगली पीढ़ी के विश्व स्तरीय वैज्ञानिकों, तकनीकविदों और प्रवर्तकों को तैयार कर सकें तो इससे हमारा भविष्य भी सुरक्षित रहेगा और हमारा वैश्विक नेतृत्व भी संभव हो सकेगा।

स्कूलों में विज्ञान और गणित की शिक्षा को अधिक प्रेरक तथा रचनात्मक बनाया जाना चाहिए। इसके अलावा हमारे देश के बच्चों तथा युवाओं के साथ वैज्ञानिकों के प्रत्यक्ष सम्पर्क के लिए हमें इंटरनेट के इस्तेमाल को बढ़ावा देना चाहिए जिस प्रकार स्कूल जाना एक बुनियादी अधिकार है उसी तरह डिजिटल कनेक्टिविटी को भी बनाया जाना चाहिए।

मैं विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हजारों बच्चों तथा युवाओं को शामिल करने के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रयासों का स्वागत करता हूँ।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि हमारे युवा छात्र अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाएं जीत रहे हैं और उनमें से 12 के नाम पर कुछ छोटे धूमकेतुओं का नाम भी रखा गया है।

हमारे देश के बच्चों को खेलों की तरह विज्ञान में भी अपने रोल मॉडल चुनने चाहिए। व्यापार और सिविल सेवाओं की तरह विज्ञान में भी अपना भविष्य चुनने वाले बच्चों पर उनके माता पिता को गर्व होना चाहिए, मगर इसके लिए विज्ञान की शक्ति तथा संभावनाओं को बेहतर तरीके से बताया जाना जरूरी है।

आईए, अब हम निकट भविष्य में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को गणतंत्र दिवस की परेड थीम बनाएं। जिस प्रकार हम अन्य क्षेत्रों में अर्जित सफलताओं पर जश्न मनाते हैं, उसी तरह वैज्ञानिक जगत की उपलब्धियों पर भी उत्सव मनाने की आवश्यकता है।

हमें उन युवा सहभागियों और प्रतियोगियों को समाज में विशेष पहचान देनी चाहिए जो विज्ञान प्रदर्शनियों में शीर्ष स्थान पाते हैं और सरकार की तरफ से भी उन्हें लगातार सहयोग देना चाहिए।

मैं अपने श्रेष्ठ युवा वैज्ञानिकों से व्यक्तिगत रूप से मिलना बेहद पसंद करूंगा। अंत में मुझे यह कहना है कि ज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित इस विश्व में भारत के लिए एक सुरक्षित, सतत और समृद्ध भविष्य या वैश्विक नेतृत्व के लिए हमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा नवाचार को अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर रखने की आवश्यकता है।

मुझे पूरा भरोसा है कि हम यह कर सकते हैं।

हम प्राचीन समय से ही विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में भारत की हमेशा उन्नतिशील परंपरा के उत्तराधिकारी हैं। गणित, चिकित्सा, धातुकर्म एवं खनन, गणना एवं वस्त्र, वास्तुकला तथा खगोल विज्ञान के क्षेत्र में विश्व की भारतीय सभ्यता की देन काफी समृद्ध रही है।

पिछले 6 दशकों में विभिन्न कठिन परिस्थितियों में हमने जो सफलताएं हासिल की हैं हम उनसे प्रेरणा तथा विश्वास हासिल कर सकते हैं। कई संस्थानों की मजबूती विज्ञान के क्षेत्र में भारत की समृद्ध प्रतिभा तथा भारत के पांच प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों के रूप में है और जिनका हाल में ही सम्मान किया है।

सबसे पहले हमें विज्ञान एवं वैज्ञानिकों के अपने गौरव को बरकरार रखना है। समाज में विज्ञान के प्रति लोगों की उत्सुकता को पुर्नजीवित करना है। हमारे बच्चों में वैज्ञानिक शिक्षा के प्रति प्रेम को फिर से जगाना है और देश के वैज्ञानिकों को कल्पना करने, सपने देखने तथा उन पर काम करने के लिए प्रेरित करना है।

आपको मुझसे बेहतर सहारा देने वाला कल नहीं मिलेगा और इसके बदले में भारत को बदलने के लिए आपकी मदद चाहता हूँ।

आप सभी का धन्यवाद, सभी को शुभकामनाएं!!

\*\*\*\*

वि. कासोटिया/किशोर/मनीषा/नीतिन/रामकिशन/हिन्दी यूनिट- 31



पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय

18-फरवरी-2015 13:17 IST

---

एयरो इंडिया शो में प्रधानमंत्री का संपूर्ण भाषण

मेरे मंत्रिमंडल के सहयोगियों, इस शो में भाग ले रहे गण्यमान्य व्यक्तियों और अतिथियों मुझे एयरो इंडिया शो के दसवें संस्करण में उपस्थित होने पर प्रसन्नता है।

इसमें 250 से अधिक भारतीय कंपनियां और 300 से अधिक विदेशी फर्म भी शामिल हैं।

इस शो में विश्वभर से कई रक्षा मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी और व्यापार जगत के सैकड़ों प्रमुख शामिल हैं।

मैं यहां आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ।

यह अब तक का सबसे विशाल एयरो इंडिया शो है। इससे हमारे देश के भीतर और भारत में अंतर्राष्ट्रीय हितों के प्रति विश्वास की नई ऊंचाई का पता चलता है।

आप में से कई शायद समझेंगे कि भारत व्यापार का प्रमुख अवसर है।

हमें विश्व में रक्षा उपकरणों का सबसे बड़ा आयातक माना जाता है।

यह आप में से कुछ को अच्छा लग रहा होगा लेकिन यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हम पहले स्थान पर नहीं बने रहना चाहते।

हमारी सुरक्षा की चुनौतियां सभी जानते हैं। हमारे अंतर्राष्ट्रीय दायित्व भी स्पष्ट हैं। हमें अपनी रक्षा तैयारियों में वृद्धि करने की आवश्यकता है। हमें अपने रक्षा बलों को आधुनिक बनाना है।

हमें भविष्य की जरूरतों के अनुरूप स्वयं को साजो सामान से लैस बनाना होगा। इसमें प्रौद्योगिकी प्रमुख भूमिका निभायेगी।

एक अरब लोगों के देश होने के नाते राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हमारी विशाल आवश्यकताएं भी हैं।

हम प्रौद्योगिकी और प्रणालियों में सम्मिलन का दायरा बढ़ा रहे हैं।

इन अवसरों से एयरो इंडिया महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय आयोजन बनता है।

मेरे लिए यह रक्षा उपकरणों का मात्र व्यापार मेला नहीं है।

यह अति उन्नत प्रौद्योगिकी और जुझारू उपकरणों वाले विशाल अंतर्राष्ट्रीय आपूर्तिकर्ताओं का विशाल सम्मेलन है।

इतना ही नहीं यह भारत के रक्षा विनिर्माण क्षेत्र की शुरुआत का मंच भी है।

सशक्त रक्षा उद्योग वाला कोई भी राष्ट्र न केवल अधिक सुरक्षित होगा अपितु इससे समृद्ध आर्थिक फायदे भी मिलेंगे।

इससे देश में निवेश, विनिर्माण के विस्तार, उद्यमों को सहायता, प्रौद्योगिकी के स्तर और आर्थिक दर में वृद्धि को भी बढ़ावा मिल सकेगा।

भारत में सरकारी क्षेत्र में रक्षा उद्योग में ही लगभग 200,000 कामगारों और हजारों इंजीनियरों तथा वैज्ञानिकों को रोजगार मिला हुआ है। ये लगभग सात अरब डॉलर मूल्य के रक्षा उपकरण प्रतिवर्ष बनाते हैं। इससे बड़ी संख्या में लघु और मध्यम उद्यमों को भी सहायता मिलती है।

निजी क्षेत्र में हमारा रक्षा उद्योग बहुत छोटा है फिर भी इसमें हजारों लोग काम करते हैं।

हमारे रक्षा उपकरणों का लगभग 60 प्रतिशत हिस्से का आयात किया जा रहा है।

और, हम विदेशों से रक्षा उपकरण प्राप्त करने के लिए दसियों अरब डॉलर व्यय करते हैं।

कुछ अध्ययनों के अनुसार अगर हम अपने आयात में 20 से 25 प्रतिशत की भी कटौती कर सकें तो इससे भारत में एक लाख से एक लाख 20 हजार के बीच और अत्यंत कुशल रोजगारों का प्रत्यक्ष सृजन किया जा सकेगा।

हम अगर खरीदे जा रहे स्वदेशी उपकरणों में 40 से 70 प्रतिशत की वृद्धि कर सकें तो अगले 5 वर्ष में हमारे रक्षा उद्योग का उत्पादन दोगुना हो जाएगा।

प्रत्यक्ष रूप से और संबंधित विनिर्माण और सेवाओं क्षेत्र में रोजगार के सृजन किए गए अवसरों के प्रभाव की कल्पना तो कीजिए।

उन्नत सामग्री और प्रौद्योगिकियों के मददेनजर अन्य क्षेत्रों को होने वाले बेहद फायदों की कल्पना करना भी आपको अच्छा लगेगा।



इसलिए हम मिशन भावना से भारत में रक्षा उद्योग को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

इसलिए यह हमारे मेक इन इंडिया कार्यक्रम का केंद्रबिंदु भी है।

हम अपनी रक्षा उपकरणों की खरीद नीतियों और प्रक्रियाओं में सुधार ला रहे हैं। भारत में निर्मित उपकरणों की स्पष्ट प्राथमिकता होगी।

हमारी खरीद प्रक्रियाओं में सरलता, जवाबदेहता और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता सुनिश्चित की जाएगी।

हमने विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की स्वीकृत सीमा बढ़ाकर 49 प्रतिशत कर दी है। यदि ऐसी परियोजनाओं से स्टेट ऑफ द आर्ट प्रौद्योगिकी आने लगे तो इस सीमा को बढ़ाया जा सकता है।

हमने 24 प्रतिशत तक के विदेशी संस्थागत निवेश के लिए धन लगाने की अनुमति दी है और अब पूंजी में कम से कम 51 प्रतिशत एक अकेले भारतीय निवेशकर्ता के निवेश की शर्त नहीं है।

कई मदों के लिए औद्योगिक लाइसेंस लेने की आवश्यकता समाप्त कर दी गई है। जहां जहां जरूरी था वहां प्रक्रिया को सरल बनाया गया है।

हम निजी क्षेत्र की भूमिका का विस्तार कर रहे हैं, ऐसा प्रमुख मंचों के लिए भी किया जा रहा है। हमारा उद्देश्य सभी को एक समान अवसर उपलब्ध कराना है।

रक्षा उद्योग को विकसित और उन्नत बनाने के लिए ऑफसेट सिस्टम अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है।

हमने ऑफसेट नीति में महत्वपूर्ण सुधारों की शुरुआत की है। मुझे यह पूरी तरह ज्ञात है कि इसमें अब भी काफी सुधारों की जरूरत है। हम स्वदेशी उद्योग और अपने विदेशी भागीदारों के साथ परामर्श से इस दिशा में आगे बढ़ेंगे।

मैं चाहता हूं कि हमारी ऑफसेट नीति सस्ते उत्पादों के निर्यात में मददगार न बने बल्कि हम इससे स्टेट ऑफ द आर्ट प्रौद्योगिकी और प्राथमिकता के शीर्ष क्षेत्रों में कौशल हासिल करना चाहते हैं।

रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए सरकारी सहायता आवश्यक है और इसके साथ खरीद का विश्वसनीय आश्वासन भी होना चाहिए।

हम भारत में प्रोटोटाइप के विकास के लिए सरकार से 80 प्रतिशत तक राशि प्रदान किए जाने की स्कीम ला रहे हैं। इसके अलावा हम प्रौद्योगिकी विकास कोष की भी शुरुआत कर रहे हैं।

काफी समय से हमारा अनुसंधान और विकास का काम सरकारी प्रयोगशालाओं तक सीमित रहा है। हमें अनुसंधान और विकास के काम में अपने वैज्ञानिकों, सैनिकों, शिक्षाविदों, उद्योग और स्वतंत्र विशेषज्ञों को शामिल करना होगा।

पिछले महीने सेना दिवस स्वागत समारोह में मैंने रक्षा उपकरण के क्षेत्र में बेहतरीन नवीनताएं लाने वाले अधिकारियों और सैनिकों से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी और मैं उनसे मिलकर काफी प्रभावित हुआ।

सबसे बड़ी बात यह है कि हमने अपनी निर्यात नीतियों को स्पष्ट, सरल और पूर्वानुमानजनक बनाया है। मगर हम निर्यात नियंत्रण और अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों के सर्वोच्च मानकों का पालन भी करेंगे।

हम अपने निर्यात का विस्तार करेंगे लेकिन हम यह भी सुनिश्चित करेंगे कि हमारे उपकरण और प्रौद्योगिकी गलत लोगों के हाथ में न पहुंच सके।

इस क्षेत्र में भारत का रिकार्ड बेदाग रहा है और ऐसा ही रहेगा।

मुझे अपनी नीतियों के अनुकूल प्रभाव से प्रसन्नता है।

भारत के निजी निगमों ने उत्साह के साथ समर्थन और सहयोग दिया है। इसी तरह हमारे लघु और मध्यम क्षेत्र में भी नया उत्साह दिखाई देता है। कई विशाल अंतर्राष्ट्रीय फर्म भी भारत में महत्वपूर्ण भागीदारी बना रही हैं।

इनमें से कुछ ने तो अपनी अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला या इंजीनियरी सेवाओं के एक हिस्से के लिए भारत का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है।

सितंबर 2014 में डायनामेटिक टेक्नोलॉजी और उसके सहयोगी बोर्डिंग ने भारत में बोर्डिंग हेलीकॉप्टर और इसके महत्वपूर्ण हिस्से पुर्जा को बनाने का संयंत्र का उद्घाटन किया। बोर्डिंग हेलीकॉप्टर की विश्वभर में ब्रिकी की जाती है। मैं समझता कि इस संयंत्र का उद्घाटन मेक इन इंडिया कार्यक्रम की शुरुआत से एक दिन के बाद किया गया।

मुझे इस बात की खुशी है कि हिस्से पुर्जा की पहली खेप अब जहाज से भेजे जाने के लिए तैयार है। लेकिन हमें अब भी बहुत कुछ करना है।

हमें अपनी खरीद और स्वीकृति प्रक्रियाओं में और सुधार लाना होगा। हमें अपनी भावी आवश्यकताओं के लिए एक स्पष्ट खाका तैयार करने का संकेत देना चाहिए।

हमें न केवल नई प्रौद्योगिकियों की प्रवृत्तियों अपितु भावी चुनौतियों के स्वरूप को भी ध्यान में रखना चाहिए।

हमें नवीनताओं पर अधिक जोर देते हुए आपूर्तिकर्ताओं की श्रृंखला विकसित करने पर भी ध्यान देना चाहिए।

हमें प्रोटोटाइप विकास और उत्पाद की गुणवत्ता के बीच की खाई को भी भरना होगा।

हमें रक्षा उद्योग की विशेष आवश्यकताओं के अनुकूल वित्तीय प्रणाली का भी विकास करना चाहिए। यह एक ऐसा बाजार है जिसमें प्रमुख रूप से सरकारें ही क्रेता होती हैं और बड़ी मात्रा में किया गया पूंजीगत निवेश होता है तथा जोखिम भी ज्यादा रहता है।

हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी कर प्रणाली से आयात की तुलना में स्वदेशी विनिर्माताओं के साथ भेदभाव न हो।

यदि हम भारत के विनिर्माण क्षेत्र में परिवर्तन ला सकें तो मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि हमारा रक्षा उद्योग अधिक कामयाबी हासिल करेगा।

हमें अधिक बुनियादी ढांचे, सशक्त व्यापारिक वातावरण, स्पष्ट निवेश नीतियों, व्यापार करने में आसानी, स्थिर और पूर्वानुमानजनक कर व्यवस्था और उत्पादन के लिए आवश्यक सामग्रियों तक आसान पहुंच बनाने की आवश्यकता है।

हमें एक ऐसा राष्ट्रीय उद्योग बनाने की जरूरत है जो उन्नत सामग्रियों, अत्यंत उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स और सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरी उत्पाद तैयार कर सके।

हमने पिछले आठ महीनों में आपके लिए अनुकूल वातावरण बनाने के वास्ते कठिन परिश्रम किया है।

हमें सबसे अधिक रक्षा उद्योग के लिए बेहद कुशल और योग्य विशाल मानव संसाधन की आवश्यकता है।

हमारे वायुअंतरिक्ष यानि एयरोस्पेस उद्योग के लिए ही अगले दस वर्ष में लगभग दो लाख लोगों की आवश्यकता होगी।

हम परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष उद्योग की तरह ही अपने रक्षा उद्योग की जरूरत पूरी करने के लिए विशेष विश्वविद्यालय और कौशल विकास केंद्र स्थापित करेंगे।

मैंने विशेष रूप से राज्य सरकारों को यहां आमंत्रित किया कि वे रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने के लिए सुविधाओं के पैकेज के साथ इस आयोजन में शामिल हों।

गण्यमान्य अतिथियों,

भारत में रक्षा उद्योग के लिए यह एक नया युग है।

अब केवल उपकरण खरीदकर उसे देश में असेंबल करना या उपकरणों को जोड़कर तैयार करना पर्याप्त नहीं होगा। ऐसा हम काफी वर्षों से करते आ रहे हैं और इससे हम किसी प्रौद्योगिकी को अपना नहीं सके या अपनी क्षमताओं का विकास नहीं कर सके। कुछ क्षेत्रों में हम उसी स्थान पर हैं जहां तीन दशक पहले थे।

अगर स्पष्ट रूप से कहा जाए तो हमारे सार्वजनिक क्षेत्र को वर्तमान की तुलना में और अधिक बेहतर करने की आवश्यकता है। हमें उनकी व्यापक संपत्तियों और विशाल क्षमताओं का दोहन करना होगा। साथ ही हमें उन्हें जवाबदेह बनाना होगा।

हम ऐसा उद्योग बनाना चाहते हैं जो गतिशील हो, जो लगातार अंतर्राष्ट्रीय उद्योग के साथ स्पर्धा में आगे रहने को तैयार हो।

मुझे विश्वास है कि भारत रक्षा उद्योग में एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के रूप में उभरेगा।

हमारे पास भारत में इसके लिए आधारभूत खाका है और राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी आवश्यकता भी है।

हम एक ऐसा उद्योग बनायेंगे जिसमें सबके लिए - सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र और विदेशी फर्मों के लिए स्थान हो।

विक्रेताओं में से विदेशी फर्म भी महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में सामने आनी चाहिए।

हमें उनकी प्रौद्योगिकी, कौशल, सिस्टम सम्मिलन और विनिर्माण क्षमता की आवश्यकता है।

इस उद्योग की ऐसी प्रकृति है कि हमेशा आयात बना रहेगा।

इसके बदले वे अपनी अंतर्राष्ट्रीय आपूर्तिकर्ता श्रृंखला के अंतर्गत भारत का इस्तेमाल कर सकेंगे।

विश्वभर में रक्षा बजट सख्त बनते जा रहे हैं। भारत के सस्ते लेकिन अतिआधुनिक विनिर्माण और इंजीनियरी सेवा क्षेत्रों से लागत में कमी लाने में मदद मिल सकती है।

भारत तीसरी शक्ति वाले देशों को निर्यात के लिए आधार भी बन सकता है। क्योंकि विशेषतौर पर भारत की रक्षा भागीदारी एशिया और उससे आगे फैल रही है।

सशक्त भारतीय रक्षा उद्योग से न केवल भारत अधिक सुरक्षित होगा बल्कि यह भारत को अधिक समृद्ध भी बनायेगा।

एयरो इंडिया हमारे लक्ष्य हासिल करने में उत्प्रेरक बन सकता है। इसलिए मैं आज यहां उपस्थित हूं।

जब हम इन अदभुत विमानों की तरफ देखते हैं और उनके विस्मयकारी फ्लाईपास्ट का आनंद लेते हैं तो मुझे यह उम्मीद बनती है कि हम और भी बहुत कुछ कर सकते हैं।

और देश की जनता को नए अवसर प्रदान करने, देश को सुरक्षित बनाने और विश्व को ओर अधिक स्थिर तथा शांतिपूर्ण बनाने के लिए हम सफल नए उपक्रमों और भागीदारियों का बीजारोपण करेंगे।  
धन्यवाद।

\*\*\*

वि.कासोटिया/एएम/एसपी/एसके-753



पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय

26-सितम्बर-2015 20:06 IST

26 सितंबर, 2015 को सैन होसे, कैलीफोर्निया में डिजिटल इंडिया डिनर में प्रधानमंत्री के भाषण के मूलपाठ का हिंदी  
रूपांतरण

धन्यवाद, शांतनू, जॉन, सत्या, पॉल, सुंदर और वेंकटेश

बहुत, बहुत धन्यवाद!

मुझे यकीन है कि यह पूर्वनिर्धारित नहीं था। लेकिन इस मंच पर आप डिजिटल अर्थव्यवस्था में भारत-अमेरिका साझेदारी की शानदार तस्वीर देख सकते हैं। सभी को नमस्कार!

दुनिया को आकार देने वाला कोई समूह अगर एक छत के नीचे जमा हो सकता है, तो वह यहां है। मैं यहां या भारत में किसी सरकारी दफ्तर की बात नहीं कर रहा हूं। कैलीफोर्निया में आना बहुत आनंद का विषय है। यह दुनिया के उन अंतिम स्थानों में एक है जहां सूर्यास्त देखा जा सकता है लेकिन यह ऐसा स्थान भी है जहां नए विचार दिन का पहला प्रकाश बनते हैं। यह बहुत सम्मान का विषय है कि आप सब आज रात यहां आए हैं। मैं आप में से कई लोगों से दिल्ली और न्यूयार्क तथा फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर मिल चुका हूं।

यह हमारी नई दुनिया के नए पड़ोसी हैं। यदि फेसबुक कोई देश होता तो वह तीसरा सबसे अधिक आबादी वाला और पहला सबसे अधिक संपर्कता वाला देश होता। गूगल ने आज अध्यापकों को पहले से कम सक्रिय और दादा-दादियों को अधिक खाली बना दिया है। ट्विटर ने सभी को रिपोर्टर बना दिया है। ट्रैफिक लाइट को काम करने के लिए सिस्को राउटर से बेहतर नहीं है। अब स्टेटस का महत्व आप जागे हैं या सो रहे हैं नहीं हैं, बल्कि इस बात से है कि आप ऑन लाइन हैं या ऑफ लाइन। आज हमारे युवाओं में बुनियादी बहस यह होती है कि एंड्रॉयड, आईओएस या विंडोज में से किसे चुना जाए। कंप्यूटिंग से संचार तक, मनोरंजन से शिक्षा तक, प्रिंट दस्तावेजों से प्रिंट उत्पादों तक और अब इंटरनेट तक का लंबा सफर बहुत कम समय में पूरा कर लिया गया है।

साफ ऊर्जा से बेहतर स्वास्थ्य सेवा और सुरक्षित यातायात तक सबकुछ आपके कार्य के आसपास नजर आ रहे हैं। अफ्रीका में फोन द्वारा लोगों को धन भेजने में मदद हो रही है। इसके जरिए छोटे दुकानों तक की रोमांचकारी यात्रा अब छोटी नहीं रही बल्कि वहां तक माउस को क्लिक करके पहुंचा जा सकता है। भारत में दूर पहाड़ी गांव में रहने वाली मां को अपने नवजात शिशु को बचाने का बेहतर उपाय उपलब्ध है। दरदराज के गांव में बच्चे को शिक्षा तक बेहतर पहुंच हो गई है। छोटा किसान अपने जमीन के प्रति और अपने उपज की बेहतर कीमत के प्रति आश्वस्त हो गया है। मेछआरे समुद्र से बेहतर तरीके से मछलियां पकड़ रहे हैं और सैन फ्रांसिस्को में बैठा युवा प्रोफेशनल स्काइप से रोज भारत में अपनी बीमार दादी का हाल ले सकता है। हरियाणा में 'बेटी के साथ सेल्फी' की पहल ने बालिकाओं की तरफ लोगों का ध्यान खींचा है और वह एक अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन बन गया है।

यह सब आप लोगों के काम की बदौलत संभव हुआ है। पिछले साल मेरी सरकार आने के बाद हमने नेटवर्क और मोबाइल फोन की शक्ति को गरीबी के खिलाफ इस्तेमाल किया है। इसके जरिए हमने अधिकारिता और समावेश के एक नए युग का सूत्रपात किया है। इसके तहत कुछ ही महीनों में एक सौ अस्सी मिलियन नए बैंक खाते खोले गए, गरीबों को लाभ सीधे पहुंचाया गया, जिनके पास खाते नहीं थे उन्हें निधियां उपलब्ध कराई गईं, बीमा तक गरीबों की पहुंच बनाई गई और बुढ़ापे में सबके लिए पेंशन का बंदोबस्त किया गया।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के इस्तेमाल से हमने पिछले कुछ महीनों के दौरान ऐसे 170 एप्लीकेशनों को चिन्हित किया है जो शासन को बेहतर बनाएंगे और विकास को तेज करेंगे।

जब भारत के गांव का एक छोटा दस्तकार न्यूयार्क में मैट्रो में सवार फोन की तरफ देखने वाले अपने ग्राहक के चेहरे पर मुस्कान लाता है, जब किरगिज गणराज्य के दरदराज के अस्पताल में किसी हृदय रोगी का इलाज दिल्ली में बैठा डॉक्टर करता है जैसा कि मैंने बिशेक में देखा था, हम जानते हैं कि हम ऐसा कुछ सृजित कर रहे हैं जिसने बुनियादी तौर पर हमारे जीवन को बदल दिया है।

जिस गति से लोग डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपना रहे हैं उसने हमारी आयु, शिक्षा, भाषा और आय के रूढ़िवादी दायरे को मिटा दिया है। मुझे गुजरात के दरदराज इलाके की गैर पढ़ी लिखी जनजातीय महिलाओं के एक समूह के साथ अपनी मुलाकात याद आती है। वे सभी एक स्थानीय दूध शीत संयंत्र में उपस्थित थीं जिसका मैं उद्घाटन कर रहा था। वे सभी उस कार्यक्रम की तस्वीरें लेने के लिए मोबाइल फोनों का इस्तेमाल कर रही थीं। मैंने उनसे पूछा कि वे इन तस्वीरों का क्या करेंगी। उनका जवाब चौंकाने वाला था।

उन्होंने कहा कि वे वापस जाकर तस्वीरों को डाउनलोड करेंगी और उनका प्रिंट आउट निकालेंगी। जी हां, वे हमारी डिजिटल दुनिया की भाषा से परिचित थीं।

और महाराष्ट्र के किसानों ने एक वाट्सअप ग्रुप बनाया है जिसके जरिए वे खेती संबंधी सूचनाएं साझा करते हैं।

बनाने वाले से अधिक खरीदने वाले उत्पादों का इस्तेमाल परिभाषित करते हैं। दुनिया उसी पुराने आधार पर चल रही है। हम मानव संघर्ष और सफलता को जारी रखेंगे। हम मानव गौरव और त्रासदियों को देखेंगे। लेकिन इस डिजिटल युग में हमें अवसर है कि हम लोगों को जीवन इस तरह बदलें जिसकी कल्पना तक दशकों पहले संभव न थी।

यही वह बिंदु है जो हमें पहले की सदी से अलग करता है। ऐसे लोग अवश्य होंगे जिनके लिए डिजिटल अर्थव्यवस्था समृद्ध, शिक्षित और अधिकार संपन्न लोगों का उपकरण है। लेकिन भारत में किसी टैक्सीड्राइवर या खोमचे वाले से पूछिए कि उसे अपने मोबाइल फोन से क्या हासिल हुआ। उसके जवाब से ये बहस समाप्त हो जाएगी। मैं प्रौद्योगिकी को अधिकारिता के साधन के रूप में देखता हूं। मैं उसे ऐसे उपकरण के रूप में देखता हूं जो उम्मीद और अवसर के बीच की खाई को पाटता है। सोशल मीडिया सामाजिक बाधाओं को कम कर रहा है। वह लोगों को मानवीय मूल्यों के आधार पर जोड़ता है न कि उनकी पहचान के आधार पर। आज प्रौद्योगिकी नागरिकों की अधिकारिता और लोकतंत्र को बढ़ा रहा है जो पहले संविधानों से शक्ति अर्जित करते थे। प्रौद्योगिकी सरकारों को मजबूत कर रही है कि वे आकड़ों को आधार बनाएं और उनके जवाब 24 घंटों में नहीं बल्कि 24 मिनटों में प्रेषित करें।

जब आप सोशल मीडिया या सेवा के विस्तार और गति के बारे में विचार करते हैं तो आप को यह विश्वास करना होता है कि वह लोगों का जीवन बदलने के लिए समान रूप से सक्षम है जो लोग उम्मीद के हाशिए पर लंबे समय से मौजूद थे। इसलिए मित्रों इसी प्रतिबद्धता से डिजिटल इंडिया का दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ है।

यह भारत के बदलाव का उद्देश्य है जो शायद मानव इतिहास में अनोखा है। इसके तहत भारत के सबसे कमजोर, सबसे वंचित और सबसे गरीब लोगों के जीवन को स्पर्श मात्र करना नहीं है बल्कि इसके तहत हमें अपने पूरे देश को, उसके जीवन को और उसकी कार्यप्रणाली को बदलना है। 35 वर्ष से कम आयु वाले 800 मिलियन युवाओं का देश बदलाव के लिए बेसब्र है और उसे प्राप्त करना चाहता है। उसकी आकांक्षाओं को पूरी करने के लिए इससे कम में काम नहीं बनेगा। हम शासन को बदलेंगे, उसे अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और सहभागिता वाला बनाएंगे। मैं ई-शासन को बेहतर, प्रभावशाली कारगर और सस्ते शासन की आधारशिला के रूप में मानता हूं। मैं अब एम-शासन या मोबाइल शासन के बारे में बात करता हूं। यह ऐसा तरीका है कि एक अरब सेल फोन वाले देश में स्मार्टफोन का इस्तेमाल बढ़े। इसमें यह क्षमता है कि एक सही समावेशी और समेकित जनआंदोलन का विकास किया जा सके। इसके तहत सुशासन सबकी पहुंच में आता है।

मैंने अभी हाल में नरेंद्र मोदी मोबाइल एप्लीकेशन शुरू किया है। इसे मुझे लोगों के संपर्क में रहने में मदद मिलती है और मैं उनके सुझावों और शिकायतों को हल करने में सक्षम होता हूं। हम चाहते हैं कि हमारे नागरिक हर दफ्तर में कागजी दस्तावेजों के बोझ से मुक्त हों। हम कागज विहीन लेन-देन चाहते हैं, हम हर नागरिक के लिए डिजिटल लॉकर बनाएंगे जहां वे अपने निजी दस्तावेज रख सकेंगे और उन्हें विभिन्न विभागों में भेज सकेंगे। हमने ई-बिज पोर्टल शुरू किया है ताकि नागरिकों को व्यापार की मंजूरी आसानी और प्रभावशाली तरीके से मिल सके और वे अपने लक्ष्य पर ध्यान दें न कि सरकारी प्रक्रियाओं पर। हम विकास में तेजी लाने के लिए और उसके बारे में जानकारी देने के लिए प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर रहे हैं।

सूचना, शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य सेवा, आजीविका, वित्तीय समावेश, लघु एवं ग्रामीण उद्यम, महिलाओं के लिए अवसर, प्रकृतिक संसाधनों का संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा-सभी नई संभावनाएं विकास मॉडल को बदलने के लिए उभरी हैं। लेकिन इन सबके के लिए हमें डिजिटल अंतराल को दूर करना होगा और डिजिटल साक्षरता को उसी तरह प्रोत्साहित करना होगा जिस तरह हम आम साक्षरता को सुनिश्चित करते हैं।

हमें सुनिश्चित करना होगा कि प्रौद्योगिकी सबकी पहुंच में हो और सस्ती हो। हम चाहते हैं कि हमारे 1.25 अरब नागरिक डिजिटल रूप से आपस से जुड़े हों। पूरे भारत में ब्राड बैंड का इस्तेमाल पिछले साल 63 प्रतिशत बढ़ा है। इसे और बढ़ाने की जरूरत है। हमने नेशनल ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क के विस्तार को गति दी है जिससे ब्राड बैंड 6 लाख गांव तक पहुंच जाएगा। हम सभी स्कूलों और कॉलेजों का ब्राडबैंड से जोड़ेंगे। हाइवेज की तरह आई-वेज भी महत्वपूर्ण है। हम अपने सार्वजनिक वाई-फाई केंद्रों को भी बढ़ा रहे हैं। उदाहरण के लिए हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि मुफ्त वाई-फाई केवल हवाई अड्डों में नहीं बल्कि रेलवे प्लेटफार्म पर भी उपलब्ध हो। गगलें से साथ मिलकर हम जल्द ही पांच सौ रेलवे स्टेशनों को इसके दायरे में ले आएंगे। हम गांव और शहरों में आम सेवा केंद्र बना रहे हैं। हम स्मार्ट सिटी बनाने के लिए भी सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करेंगे।

और, हम चाहते हैं कि अपने गांवों को स्मार्ट आर्थिक केंद्रों में बदलें और अपने किसानों को बाजार से जोड़ें तथा उन्हें मौसम के उतार चढ़ाव से प्रभावित न होने दें। मेरे लिए पहुंच का अर्थ वह माध्यम है जो स्थानीय भाषा में उपलब्ध हो। 22 सरकारी भाषाओं वाले देश में यह बहुत बड़ा लेकिन महत्वपूर्ण काम है। उत्पादों और सेवाओं की सस्ती उपलब्धता हमारी कामयाबी के लिए जरूरी है। इसके कई आयाम हैं। हम भारत में सस्ते और ऊंची गुणवत्ता वाले उत्पादों के निर्माण को प्रोत्साहन देंगे। यह मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया और डिजाइन इन इंडिया के दृष्टिकोण का अंग है।

हमारी अर्थ व्यवस्था और हमारा जीवन तंत्र से जुड़ रहा है, इसलिए डेटा निजता और सुरक्षा, बौद्धिक संपदा अधिकार तथा साइबर सुरक्षा को हम सर्वाधिक महत्व दे रहे हैं।

और, मैं जानता हूँ कि डिजिटल इंडिया के दृष्टिकोण को हासिल करने के लिए सरकार को आपकी तरह सोचना होगा।

इसलिए, संरचना से सेवाओं तक, उत्पाद निर्माण से मानव संसाधन विकास तक सरकारी समर्थन से नागरिकों को सक्षम बनाने और डिजिटल साक्षरता बढ़ाने तक डिजिटल इंडिया एक ऐसा बड़ा साइबर संसार है जहां आपके लिए अवसर हैं। काम बहुत बड़ा है। कई चुनौतियां हैं लेकिन हम यह भी जानते हैं कि नई मजिल तक तब तक नहीं पहुंचा जा सकता, जब तक नए रास्ते न खोले जाएं।

जिस भारत का सपना हमने देखा है उसे अभी पूरा किए जाना बाकी है। इसलिए उसका रास्ता बनाने का अवसर हमारे पास है। हमारे पास प्रतिभा है, उद्यम है, कौशल है, जिससे हम सफल हो सकते हैं। हमारे पास भारत और अमेरिका के बीच साझेदारी की ताकत है। भारतीयों और अमेरिकियों ने ज्ञान अर्थव्यवस्था को आकार देने में साथ-साथ काम किया है। उन्होंने हमें प्रौद्योगिकी की अपार क्षमता से परिचित कराया है। बड़े कॉर्पोरेट से लेकर युवा प्रोफेशनलों तक इस महान नवाचार केंद्र के सभी लोग डिजिटल इंडिया की दास्तान का हिस्सा बन सकते हैं। मानवता का 1/6 हिस्सा सतत विकास के लिए हमारी दुनिया और हमारे ग्रह के लिए एक प्रमुख ताकत है। आज हम इस सदी की साझेदारी को रेखांकित करने के लिए भारत-अमेरिका साझेदारी की बात करते हैं। यह दो प्रमुख कारणों पर टिकी है। दोनों ही आज कैलीफोर्निया में दृष्टिगोचर हैं। हम सभी जानते हैं कि मध्य एशिया प्रशांत क्षेत्र इस सदी को आकार देगा। और भारत तथा अमेरिका जैसे विश्व के दो सबसे बड़े लोकतंत्र इस क्षेत्र के दो सिरों पर मौजूद हैं।

हमारे ऊपर इस क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि का भविष्य बनाने का उत्तरदायित्व है।

हमारे संबंध युवा, प्रौद्योगिकी और नवाचार की शक्ति पर आधारित हैं। इससे हमारी साझेदारी तेज होगी और हम दोनों देश समृद्ध और विकसित होंगे। इसके अलावा इस डिजिटल युग में हम मूल्यों और साझेदारी की ताकत से एक बेहतर और उन्नत दुनिया को आकार दे सकते हैं।

धन्यवाद।

एकेपी/एसएनटी - 4887

